International Journal of Multidisciplinary Education and Research
www.multidisciplinaryjournals.in
ISSN: 2455-4588
Received: 07-04-2023, Accepted: 23-04-2023, Published: 09-05-2023
Volume 8, Issue 2, 2023, Page No. 17-18

भारत में औद्योगिकरण की समस्याओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

अनूप
सहायक प्रोफेसर, (वाणिज्य), राजकीय महिला महाविद्यालय, अटेली, हरियाणा, भारत

सारांश
अठारहवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दी में संसार के जिन देशों में औद्योगिकरण तीव्र गति से हुआ वे बीसवीं शताब्दी के विकसित देशों के वर्ग में आ गये। अतः यह माना जाने लगा कि विकासशील देशों के विकास का मूल मंत्र औद्योगिकरण है। किंतु बीसवीं शताब्दी में भी जब परिवहन और संचार समुचित विकसित हैं, ज्ञान तथा आवश्यक वस्तुओं का आदान–प्रदान अपेक्षया सरल हो गया है, विकासशील देश न तेजी से औद्योगिकरण कर पा रहे हैं और न विकास की गति ही अधिक तीव्र है। संसार में विभिन्न देश विकास को अनेक सीढ़ियों पर खड़े हैं। विकास के लिए उनकी समस्याएं भी भिन्न–भिन्न है तथा उनके निदान भी समान नहीं है। अधिकतर देशों में धन का समान विभाजन नहीं है। विकासशील देशों में जनसंख्या की समस्या भी भिन्न–भिन्न है। दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों में पिछले दो–तीन दशकों में हुए जनसंख्या विस्फोट ने गंभीर समस्या पैदा कर दी है। यहां विकास के सभी प्रयत्न बढ़ती हुई जनसंख्या व्यर्थ हो जाते हैं तथा न प्रति व्यक्ति आय और न उत्पादन हो बढ़ता हुआ मालूम देता है। इसके विपरीत ब्राजील तथा घाना जैसे देशों में न्यून जनसंख्या की समस्या है और वहां हुआ थोड़ा विकास प्रति व्यक्ति आय तथा उत्पादन में परिलक्षित होने लगता है।

मूल शब्दः औद्योगिकरण, विकासशील देश, निदान, जनसंख्या विस्फोट, धन का विभाजन

प्राकृतिक संसाधन

विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर निर्भर है तथा कृषि में भी विकास के लक्षण नहीं मिलते। दूसरे शब्दों में वहां के प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग नहीं हो रहा है तथा अन्य आर्थिक कार्य जैसे व्यापार, उद्योग, परिवहन इत्यादि का सीमित विकास हुआ है। यहां तक कि निर्यात भी कृषि उत्पादन, खनिज अथवा अन्य उत्पादों का होता है। विकासशील देशों में भूमि की व्यवस्था भी जन–जातियों की परंपरा के अनुरूप है अथवा किसी विशिष्ट जनसमूह का स्वामित्त्व है। कुछ देशों जैसे भारत में व्यक्ति भूस्वामी है। इसी कारण राज्य शासन का सक्रिय योगदान नहीं हो पाता। वास्तव में संसाधन तभी महत्वपूर्ण होते हैं जब उनका मानवीय उपयोग संभव होता है। अतः विकासशील देशों की मुख्य समस्या लोगों का तकनीकी ज्ञान, कर्मठता, आविष्कार की प्रवृत्ति, बेहतर स्तर से रहने की इच्छा आदि महत्वपूर्ण है। इसके होने पर ही प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय बढ़ने से जीवन स्तर ऊँच हो जाता। इन तथ्यों से यह सिद्ध होता है कि औद्योगिकरण के लिए आवश्यक पृष्ठभूमि तथा कारक न हो तो उद्योगों की किसी भी विकासशील देश में अचानक स्थापित नहीं किया जा सकता है और न उनका लाभ ही वे देश उठा सकते हैं।

विश्व–पूँजी

विकासशील देशों में पूँजी एक अन्य गंभीर समस्या है। जितना उत्पादन होता है उसका अधिकतर भाग जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति में व्यय हो जाता है। अतः न व्यक्ति का जीवन स्तर बेहतर हो पाता है और न सार्वजनिक पूंजी का ही संचय होता है। परिणामतः विकासशील देशों में संसाधन तथा मानवीय श्रम एवं ज्ञान होने पर भी औद्योगिकरण तथा मानवीय श्रम एवं ज्ञान होने पर भी औद्योगिकरण में पूंजी की कमी एक गंभीर बाधा होती है। पूंजी उत्पादन अनुपात अथवा पूंजी गुणांक कह सकते हैं। यदि हम विकसित देशों को मापन करें तो पाते हैं कि मूल्य की दर कम होने के कारण यूरोपीय तथा एंग्लों अमेरिकी देशों में वृद्धों की संख्या एक गंभीर समस्या है। जबकि विकासशील देशों में वर्तमान समय जन्म दर बहुत अधिक है किन्तु मृत्यु दर धीरे–धीरे कम हो रही है। यही कारण है कि जनसंख्या भी तेजी से बढ़ रही है एंव पूंजी निजी आवश्यकताओं में अधिक व्यय हो रही है। देश के विकास के लिए उसका संख्य एवं विनियोग नहीं हो पा रहा है। इस प्रकार जीवन स्तर को बनाए रखना कठिन हो जाता है तथा एक वर्ग विशेष में यह स्तर गिरता जाता है।

विश्व की जनसंख्या

1. विकासशील देशों को बांटा जा सकता हैः–
2. जहाँ उत्पादन संसाधन की तुलना में जनसंख्या कम है। जाहां जनसंख्या असाधारण सघनता है। ऐसे देश में जनसंख्या अनेक प्रकार की समस्यांए प्रस्तुत करती है। चिकित्सा की सुविधा के कारण यहां मृत्यु दर गिरी है किन्तु जन्मदर में कमी नहीं हुई है। जनसंख्या की असाधारण वृद्धि का यह प्रमुख कारण है। कार्यरत जनसंख्या की वृद्धि से विकासशील देशों में बेरोजगारी की समस्या भी गंभीर हो जाती है। जैसा कि आज भारत में है। जितनी तेजी से जनसंख्या की वृद्धि होती है उसी के समकक्ष आर्थिक कार्यों का विकास नहीं होता। औद्योगिकरण का एक अन्य गंभीर पक्ष जनसंख्या से जुड़ा है। मशीनों के अविष्कार, उनमें सुधार एवं रख–रखाव के लिए बड़ी संख्या में तकनीकी ज्ञानयुक्त वैज्ञानिकों की आवश्यकता होती है अन्यथा विकासशील देशों को तकनीशियन तथा वैज्ञानिकों का आयात करना होता है। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में यह गंभीर समस्या थी। अतः विकासशील देशों में न केवल जनसंख्या संबंधी विशिष्ट समस्याएं है बल्कि वह ज्ञान एवं कुशलता की दृष्टि से भी पिछड़ी हुई है। शिक्षा और ज्ञानवर्धन ही इसका निदान है। इस प्रकार जनसंख्या की गुणवत्ता के सुधार के लिए भी पूंजी तथा अन्य आवश्यक साधनों की आवश्यकता होती है, जो विकासशील देशों में पुनः बहुत सीमित है।

परिवहन तथा बाजार

विकसित देशों के मानचित्र पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि वहां जल तथा स्थल परिवहन का सघन जाल है जो औद्योगिकरण की पहल आवश्यकताओं में से है विकासशील देशों में परिवहन एक गंभीर समस्या है। प्रथम उद्योग परिवहन केन्द्रों पर स्थापित किए गए अथवा पिछड़े हुए प्रदेशों में परिवहन मार्ग

डाले गए। भारत में पिछली शताब्दी में स्थापित उद्योगों जैसे–सूती कपड़ा, जूट, लोहा–इस्पात, कोयला उत्खन्न आदि के स्थान इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। आज भी पिछड़े हुए प्रदेशों में उद्योगों के विकास में परिवहन मार्गों की कमी एक बड़ी बाधा है। विकासशील देशों में जीवनस्तर नीचा है, प्रति व्यक्ति आय कम है, औद्योगिक विकास सीमित है एवं परिवहन मार्गों का जाल विरल है। अतः वहां की जनसंख्या की क्रय क्षमता सीमित है और आवश्यकताएँ भी सीमित है। अतः विकासशील देशों का बाजार भी सीमित है।

विकासशील देशों में औद्योगिकरण

विकासशील देशों में जब अविकास की समस्याओं का विश्लेषण किया जाता है तो औद्योगिकरण को अविकास का निदान बताया जाता है। क्योंकि विकसित देशों का इतिहास यह प्रमाणित करता है कि औद्योगिक विकास से हो वे देश आगे बढ़ सके हैं। दूसरे, औद्योगिक उत्पादन के साथ–साथ अन्य आर्थिक कार्यों का विकास भी होता है तथा जीवन की अनेक सुख–सुविधाएँ औद्योगिक उत्पादन के द्वारा ही प्रदान की जाती है। सर्वप्रथम आधारभूत अथवा प्रथम वर्ग के उद्योगों का विकास आवश्यक होता है। इन उद्योगों से वे वस्तुएँ बनायी जाती है। जिनकी आवश्यकता प्रदेश के बहुमुखी विकास के लिए तथा अन्य द्वितीय वर्ग के उद्योगों के विकास के लिए होती है। तथापि विकासशील देशों में औद्योगिकरण से अनेक समस्याओं का निदान संभव होता है बहुमुखी आर्थिक विकास के साथ शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी ज्ञान के साथ जनसंख्या की वृद्धि दर में भी कमी होती है ऐसा देखा गया है। साथ ही अकुशल मजदूरों की तुलना में ज्ञानवान लोगों की एवं औद्योगिक प्रक्रिया में कुशलता की परंपरा बनने लगती है। अतः विज्ञान तथा तकनीकी ज्ञान के लिए विकसित देशों को अग्रणी देशों की और नहीं देखना पड़ता, न ज्ञान का न कुशल तकनीशियनों को आयात करना होता है। वास्तव में विकसित देशों की यह प्रमुख पूँजी है। इस तथ्य को इस बात से समझा जा सकता है कि द्वितीय विश्वयुद्ध में पश्चिमी यूरोपीय देशों में असाधारण विनाश हुआ। अर्थव्यवस्था छिन्न–भिन्न हो गई, उत्पादन ठप्प हो गया। किंतु ज्ञान एवं तकनीकी कुशलता के परिणामस्वरूप सभी देशों में युद्ध पूर्व अथवा उससे अधिक उत्पादन होने लगा है।

निष्कर्ष

भारत जैसे विकासशील देशों में औद्योगिकरण आर्थिक विकास में बहुत दूर तक सहायक सिद्ध हो सकता है किंतु औद्योगिक विकास सम्पूर्ण आर्थिक तंत्र का एक अंग है, जब तक अन्य आर्थिक और मानवीय पक्ष भी विकसित न हो तो केवल औद्योगिक विकास संभव नहीं होता। यह अवश्य है कि औद्योगिक विकास से प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों का दोहन एवं उपयोग बड़े पैमाने पर होने लगता है, अतः विकास का वह एक महत्वपूर्ण चरण है

संदर्भ ग्रंथ

1. Vakil CUS, Mohan Rao. Industrial Development of India: Policy and Problems. New Delhi, Orient Longman, 1973.
2. Gadgil DR. The Industrial Evolution of India (Calcutta, 1950.
3. Kuchhal SC. The Industrial Economy of India. Chaitanya Publishing Allahabad, 1969.
4. Mountjoy AB. Industrialization and Underdeveloped Countries, London: Hutchinson Univ. Lib, 1969.
5. Rao BS. Surveys of Indian Industries, London Oxford University Press, 1957, 1(2).
6. Singh MB. Industrial Development in India-A Geographical Analysis, Varanasi: Lotus Publications, 1985.
7. Sinha BN. Industrial Geography of India: Calcutta: The World Press Ltd, 1972.